श्री अरविन्द घोष के 20वीं सदी के महान ऋषि विषय पर केन्द्रित एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन

भारत की स्वाधीनता का अर्थ केवल राजनीतिक स्वाधीनता नहीं: डॉ. महेश शर्मा

एक संदेश संवाददाता

रांचीः आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय कला केन्द्र, क्षेत्रीय शाखा, रांची, रांची विश्वविद्यालय तथा श्री अरविन्दों आश्रम, रांची के संयुक्त तत्वावधान में श्री अरविन्द घोष के 20वीं सदी. के महान ऋषि विषय पर केन्द्रित एक दिवसीय सेमिनार का आयोजन। मुख्य अतिथि, महात्मा गांधी सेंट्रल विश्वविद्यालय, के चांसलर और आइजीएनसी के ट्रस्टी डॉ. महेश शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा भारत की स्वाधीनता का अर्थ केवल राजनीतिक स्वाधीनता नहीं था वल्कि वे भारत की स्वाधीनता का लक्ष्य मानव जाति को एक आध्यात्मिक नेतृत्व प्रदान करना मानते थे, चूँकि पराधीन भारत संसार को आध्यत्मिकता का संदेश देने और मानव जाति का पथ प्रदर्शक बनने में असमर्थ है। अतः उसे स्वाधीन होना चाहिए और स्वाधीन होकर आध्यात्मिकता के प्रसार के उच्च लक्ष्यों की प्राप्ति की ओर बढ़ना चाहिए। आजादी के अमृत महोत्सव के अंतर्गत हमे यह महसूस हुआ की हमारी हर गतिविधि से हिन्दुस्तान दिखाई पड़ना चाहिए। स्वतंत्र होने का अर्थ स्व को बचाकर रखना होगा। उन्होने कहा कि श्री अरविन्दों घोस ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम से मुंह नहीं मोड़ा और न भारत के प्रति अपनी देश भक्ति को ही नहीं मुरझाने दिया। कर्मक्षेत्र साधनों द्वारा प्राप्त करने का भार उन्होनें आन्दोलन के अन्य लोगों पर छोड़ दिया और और अपने उपर आध्यामिक साधनों द्वारा उन लक्ष्यों की पूर्ति का भार वहन किया। अगस्त 1905 ई0 में अपनी धर्मपरवी को उन्होने एक पत्र लिखा। डॉ. कमल कुमार बोस, सह-आचार्य, संत जेवियर्स महाविद्यालय ने कार्यक्रम की रूपरेखा एवं श्री अरविन्दों के जीवन दर्शन से उपस्थित छात्रों का ज्ञान संबर्धन किया।

आइजीएनसीए, के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. कुमार संजय झा ने अतिथियों का स्वागत किया और संगोष्ठी के उदेश्य पर प्रकाश डाला। डॉ. हरेन्द्र प्रसाद सिन्हा, डॉ. विनोद कुमार एवं श्री दीपंकर घोष ने अतिथियों का अभिनन्दन किया। श्रीमती सुचिता दास गुप्ता ने स्वागतगान प्रस्तुत किया। श्री अरविन्दो आश्रम रांची के अध्यक्ष एवं पूर्व आइएफएस डॉ. एस. एन. त्रिवेदी ने विषय प्रवेश कराया और श्री अरविन्दो घोष के जीवन के विभिन्न पड़ावों से रूबरू कराया उनका समस्त कर्ममय जीवन प्रभु कृष्ण की इच्छा से संचालित है। उन्होने उनके अनुकरणीय व्यक्तित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। रांची वि.वि. के कुलपति प्रो. कामिनी कुमार ने महर्षि अरविन्दो के विराट व्यक्तित्व पर विचार किया, उन्हे भारतीय पुनजीगरण और भारतीय राष्ट्रवाद की अमर विभूति बताया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन श्री अंजनी सिन्हा किया।